International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

मध्यसोन घाटी के पुरातात्विक अवशेषों का नवीन पुनरावलोकन

डा0 अवध नारायण
प्राचार्य एस0एम0आर0डी0 कॉलेज
हण्डिया इलाहाबाद

मध्य सोन नदी घाटी के भूतात्विक जमावों में पशुओं के बहुसंख्यक जीवाश्म भी मिले। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग और संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलीफोर्निया स्थित बर्कले विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रागितिहासविद्ों द्वारा जी0आर0शर्मा एवं जे0डी0 क्लार्क के संयुक्त निर्देशन में सन् 1980 से 1982 के बीच पश्चिम में चुरहट से लेकर पूर्व में गोपद–सोन के संगम के समीप स्थित बघोर तक मध्य सोन नदी घाटी का भूतात्विक तथा पुरातात्विक विस्तृत सर्वेक्षण एवं उत्खनन किया गया है उत्तर प्रदेष के दक्षिणी पठारी भाग जिसमें वाराणसी जिले की चकिया तहसील, मिर्जापुर जिले का समस्त क्षेत्र, इलाहाबाद जिले की मेजा, करछना तथा बारा तहसील, कौषाम्बी जनपद और झांसी मंडल के लगभग समस्त जनपद का क्षेत्र, सम्मिलित है जो मध्य गंगाघाटी क्षेत्र के अन्तर्गत आते है। मध्य सोनघाटी जिसमें मुख्यतः मध्य प्रदेष के रीवा जनपद के आंषिक तथा सींधी जनपद का उत्तरी क्षेत्र आता है जिसे अध्ययन की सहजता की दृष्टि से विन्ध्य क्षेत्र भी कहते है। यहाँ समय–समय पर इलाहाबाद विष्वविद्यालय के अन्वेषण उत्खनन और अनुसंधान के फलस्वरूप अनुःपुरापाषाणिक एवं मध्य पाषाणिक स्थल प्रकाष में आये हैं। मिर्जापुर में लगभग 50 स्थल मिले हैं जो मध्य पाषाण काल के हैं इनमें से मोरहना पहाड़, बघहीखोर और लेखहिया का उत्खनन भी किया जा चुका है। वाराणसी के चकिया तहसील में चन्द्रप्रभा नदी के किनारे अनेक स्थल प्रकाष में आयें हैं, जहाँ से मध्य पाषाणिक उपकरण मिले हैं। इलाहाबाद की मेजा तहसील में बेलन घाटी में चोपनीमाण्डों, कोल्डिहवा आदि अनेक स्थल मिले हैं।

इस संस्कृति के अवषेष उच्च पूर्वपाषाण काल और मध्य पाषाण काल के संक्रमणात्मक स्थिति का द्योतन करते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इस काल के सांस्कृतिक अवषेषों को न तो उच्च पूर्व पाषाण काल में रखा जा सकता है और न ही मध्य पाषाण काल में। ये दोनों ही के मिले जुले रूप को दर्षाते हैं। इसीलिए पुरातत्वविद्ों नें इसे 'अनुःपुरापाषाणकाल' नाम दिया है। मध्य गंगा घाटी की इस प्राचीनतम संस्कृति5 के प्रमाण अभी तक कुल छः स्थलों

– वाराणसी में गढ़वा, इलाहाबाद में कूढ़ा एवं अहिरी, प्रतापगढ़ में सुलेमान पर्वतपुर, मन्दाह तथा साल्हीपुर से प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के उपकरणों का निर्माण विभिन्न रंगों– काले, लाल, पीले, और सफेद चर्ट पत्थरों पर किया गया है। कुछ उपकरण चैल्सिडनी पर भी बने हुए प्राप्त हुए हैं। पूर्णतः निर्मित और प्रयुक्त उपकरणों के साथ–साथ कोर एवं फलक की उपस्थिति के आधार पर कहा जा सकता है कि इन उपकरणों का निर्माण व प्रयोंग इन्हीं स्थलों पर किया गया था क्योंकि गंगा के मैदान में इन पत्थरों का मूल स्रोत नहीं था। इसलिए कोर से तब तक ब्लेड निकाला गया जब तक वह अत्यन्त छोटे नहीं हो गये। पूर्णतः निर्मित उपकरणों में पुनर्गठित ब्लेड, भूथड़े ब्लेड, छिद्रक, ब्यूरिन, स्क्रेपर, और अर्द्धचन्द्र सम्मिलित हैं।

मध्य पाषाणिक पुरास्थलों में सर्व प्रथम मिर्जापुर जिलों के उत्खनित स्थलों मोरहना पहाड़, बघही खोर और लेखहिया का उल्लेख किया जा सकता है। मोरहना पहाड़ मिर्जापुर जिले के भैसोर गाँव से लगभग 5 कि0 मी0 की दूरी पर दक्षिण की ओर सड़क के किनारे अवस्थित है। इसका उत्खनन सन् 1962–1964 ई0 तक इलाहाबाद विष्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा कराया गया अनःपुरापाषाण काल चोपनीमाण्डो के दसवें और अन्तिम स्तर से 20 से0 मी0 मोटे जमाव में मिलता है। इस स्तर के उपकरण परवर्ती उपकालों के लघुपाषाण उपकरणों की तुलना में बड़े हैं। इन उपकरणों में समतान्त पार्ष्व वाले ब्लेड कुण्ठित पार्ष्व वाले ब्लेड, खुरचनी तथा क्रोड और फलक है। ये उपकरण काफी बड़े है। जिससे ऐसा लगता है कि ये उसकाल के हैं जब उच्च पुरापाषाण काल और मध्य पाषाण काल का संक्रमण काल चल रहा था।

मध्य सोन नदी घाटी में ज्वालामुखी के उद्गार से निकली हुई राख का जमाव मिलता है। इसका स्तरीकण क्रम कभी निश्चित नहीं है। कहीं–कहीं यह जमाव बाघोर जमाव के रूक्ष वर्ग के ऊपरी स्तर से मिला है। मार्टिन विलियम्स तथा एम0 क्लार्क ने इस जमाव की ओर सर्वप्रथम विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया । इसके बाद ही महाराष्ट्र में बोरी के जमाव की खोज हुई। मध्य सोन घाटी में घोघर से खेतौही नामक स्थान तक लगभग 30 वर्ग कि0मी0 के क्षेत्र में यह जमाव फैला हुआ मिला है। भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के पी0के0 वसु, एस0 विश्वास तथा पी0के0 आचार्य के अनुसार14 यह जमाव सुमात्रा के तोबा नामक ज्वालामुखी

पर्वत के उद्गार से निकली हुई ''नवीनतम तोबा राखा के जमाव'' से सम्बन्धित है। पोटैशियम आर्गन तिथि विधि से इसकी तिथि 74000 20000 बी0पी0 है। जो साक्ष्य उपलब्ध हैं, उनके अनुसार सुमात्रा में तीन बार ज्वालामुखी का उद्गार समय–समय पर हुआ था। इस जमाव का सम्बन्ध तीसरे तथा नवीनतम जमाव से है। मध्य सोन नदी घाटी के विभिन्न जमावों का कालानुक्रम निर्धारित करने का भी प्रयास किया गया है। अनुमानतः सिहावल जमाव मध्य प्राति नूतन काल से ही सम्बन्धित है तथा इसे एक लाख वर्ष से अधिक पुराना समझा जा सकता है। पटपरा जमाव उच्च प्रातिनूतन काल से सम्बन्धित माना गया है। इसका समय एक लाख से तीस हजार वर्ष पहले तक समझा जाता है। बाघोर जमाव के 'रूक्षवर्ग' का समय 30 हजार वर्ष से 12000 वर्ष पहले तक निर्धारित किया गया है। महीन वर्ग का जमाव 12000 वर्ष पहले शुरू होती है। खेतोही जमाव का समय 'नूतन काल' माना जाता है। अर्थात् इसकी तिथि लगभग 10000 वर्ष पूर्व अनुमानित की गयी है।

पुरापाषाण काल एवं मध्य पाषाणकाल की संस्कृतियां अपने भूतात्विक परिप्रेक्ष्य में देखी जा सकती है। निम्न पुरापाषाण काल से सम्बन्धित 30 से अधिक पुरास्थल अब तक प्रकाश में आ चुके हैं मध्य सोन नदी घाटी के सिहावल जमाव से निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण प्राप्त हुए हैं। पुरापाषाण काल से सम्बन्धित प्रमुख उत्खनित पुरास्थलों में सिहावल, नकझरखुर्द तथा पटपरा प्रमुख हैं। मध्य सोन नदी घाटी में निम्न पुरापाषाणिक पुरास्थल सोन नदी के उत्तर और दक्षिण दोनों तरफ मिले हैं, लेकिन बहुसंख्यक पुरास्थल सोन नदी के उत्तर में ही है। नदी के उत्तर में छोटी पहाड़ियों की एक श्रृंखला नदी के समानान्तर है। कही–कहीं यह श्रृंखला जमीन की सतह से ऊपर दिखती है तो कहीं–कहीं जमीन के अन्दर चली गयी प्रतीत होती है। निम्न पुरापाषाण काल के पुरास्थलों से हैण्ड एक्स, क्लीवर, स्क्रैपर, नुकीले हैण्ड एक्स मिले हैं। किसी भी पुरास्थल से पेबल उपकरण नहीं मिले हैं। उपकरणों के निर्माण के लिए क्वार्टजाइट, चर्ट तथा यदा–कदा क्वार्ट्ज का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार पत्थरों के चयन में विविधता मिलती है। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि सोन की तलहटी में चर्ट के शैल खण्ड बड़ी संख्या में मिलते हैं।

मध्य सोन नदी घाटी में अभी तक लगभग 80 से अधिक उच्च पुरापाषाणिक पुरास्थल प्रकाश में आ चुके हैं। बाघोर जमाव के 'महीन वर्ग' से इस प्रकार के

उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य सोन नदी घाटी में कैमूर की तलहटी को उच्च पुरापाषाण काल के मानव ने अपने कार्य स्थलों के लिए चुना । इस प्रकार सम्पूर्ण सोन नदी घाटी में मानव केवल उच्च पूर्व पाषाण काल ही नहीं बल्कि पूर्व पाषाण काल व मध्य पाषाणकाल के औसत जमाव क्रमशः 1.50 मीटर व 1 मीटर मोटा है जो यह इंगित करता है कि मानव यहां जीवन निर्वाह की दृष्टि से काफी लम्बे समय तक यहां रहा चूंकि इस काल में घर बनाने की परम्परा नहीं विकसित हो पायी थी किन्तु पेड़ों के नीचे, खुले आसमान में, व घघरिया– 2 जैसे स्थानों पर गुफा–कन्दराओं में भी रहने के अत्यधिक प्रमाण के साथ–साथ यहां जगह–जगह पुरापाषाणिक कब्र भी मिलते हैं।17 इससे यह संकेत मिलता है कि मानव का कार्य क्षेत्र विस्तृत हो रहा था। उच्च पुरापााषाण काल के कतिपय पुरास्थलों का उत्खनन भी किया गया है जिनमें बाघोर प्रथम, बाघोर तृतीय19 तथा रामपुर उल्लेखनीय है । उच्च पुरापाषाण काल के उपकरण इन उपर्युक्त पुरास्थलों पर भूतात्विक जमावों से मिले हैं। उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों में प्वाइन्ट, खुरचनी, चान्द्रिक तथा ब्लेड आदि विशेष उल्लेखनीय है।

मध्य सोन नदी घाटी में स्थित सीधी जिले में अमिलिया थाना से लगभग 15 कि0मी0 पश्चिम चुरहट मार्ग घोघरा के निकट एक नवीनतम मध्य पूर्व पाषाणिक स्थल प्रकाश में आया जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्राचीन इतिहास विभाग के प्रो0 जे0एन0 पाल ने खोजा। यहां पर 3 ट्रेंच डाले गये जिसको ढाबा–1, ढाबा–2 एवं ढाबा–3 का नाम दिया गया। ढाबा–2 के ट्रेंच सुपरवाइजर बी0एच0यू0 शोध छात्र हरिन्द्र प्रसाद राम व देवेन्द्र प्रताप मिश्र व आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के डॉ0 केरी थे। ढाबा–3 के सुपरवाइजर कनार्टक विश्वविद्यालय के जर्नादन बोरा व आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के माइकल हसलम ने निर्देशित किया। हम देखते हैं कि जहाँ पूर्व पाषाण कालीन मानव का जीवन पूर्णतः संचरणषील था वह मात्र कन्दमूल फल और जैविक आहार पर ही निर्भर था किन्तु अनःपुरापाषाण काल में मैदानी क्षेत्र के सम्पर्क में आने से घास के दानों की जानकारी हुई और एकत्र करने या रखने के लिए उसे मृद्भाण्डों की आवष्यकता हुई जिसका वह निर्माण किया। धीरे–धीरे वह अपने रहन–सहन और उपकरण प्रकारों में नवीनता ला रहा था तथा साथ ही साथ अपने आवास को स्थायी रूप देने में प्रयत्नषील था। आज दुनिया के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण चुनौती पृथ्वी के तापमान का बढ़ना है1। यदि ये माना जाय कि ये समस्या

आधुनिक युग की नवीन समस्या है तो ये सहजता से नकारा जा सकता है क्योंकि इस समस्या का सूत्रपात प्राचीन युग से ही दिखाई देती है, जिसका उदाहरण निर्बाध रूप से सैन्धव सभ्यता के उत्खनित प्रमुख पुरास्थलों से मिलता है।

References

Journal of Anthropological Archaeology the Palaeolithic of the Middle Son Valley North Central India : Changes in Hominin lithic technology and behaviour during the upper pleistocene : Jones Sach C., & Pal J.N. 323-341.

Journal of Anthropological Archaeology the Palaeolithic of the Middle Son Valley North Central India : Changes in Hominin lithic technology and behaviour during the upper pleistocene : Jones Sach C., & Pal J.N. 323-341.

History to Prehistory Sharma G.R. Mandal D. 4.

Preliminary Report on Excavation at the late Palaeolithic occupation site at Baghor-I. Kenayor, J.M. Mandal D, Mishra, V.D. and Pal J.N.

On occurrence with small Technology sin the upper member of the Baghor Formation at the Baghor III : Clark J.D. & R. Dreiman. R, 128.

An upper Palaeolithic surface collection from Rampur : Mishra V.D. Mandal D. Singha P. and Pal, J.N.

Preliminary Report on Excavation at the late Palaeolithic occupation site at Baghor-I. Kenayor, J.M. Mandal D, Mishra, V.D. and Pal J.N., 128.

Rock shelters with Paintings on the top of the Kaimur Escarpment at Ghagharia and at Account of the Excavation and Analysis of the Mesolithic occupation at the Ghagharia I Shelter : Brandt.S.A., Clark J.D, Gutin J.A., and Mishra B.B.,

शर्मा, जी0 आर0 1973, पूर्वोक्त, पेज 120–130।.

शर्मा, जी0 आर0 1978, प्रागैतिहासिक मानव की कहानीः गंगा घाटी की प्राचीन संस्कृति पर नया प्रकाश, दिनमान, भाग–14, अंक–34, 20 से 26 अगस्त, 1078, पेज–24.

शर्मा, जी0 आर0 और अन्य 1980, फ्राम हण्टिंग गैदरिंग टू फूड प्रोडक्शन एण्ड डोमेस्टीकेशन आफ एनीमल्सः एक्सकवेशन्स एट चोपनी, माण्डो, महदहा एण्ड महगड़ा।

पाण्डेय, जे0 एन0 1985, पूर्वोक्त, पेज–163–170.